Vol 5 Issue 3 Dec 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भोटिया जनजाति के महिलाओं का कृषि व पशुधन में योगदान (जनपद पिथौरागढ़ के धारचूला एंव मुनस्यारी विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)

[1]सुरेश सिंह नपलच्याल , [2] के. एस.रमोला
[1]शोध छात्र, वाणिज्य स्कूल, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर बादशाहीथौल
[2]एसोशिएट प्रोफेसर, वाणिज्य स्कूल, हे. न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर बादशाहीथौल

सारांश

भारत में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। ये जनजातियाँ केवल विकास की विभिन्न अवस्थाओ पर ही नहीं हैं अपितु इनमें प्रजातीय भाषायी, आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक, तथा धार्मिक दृष्टि से भी अनेक अन्तर पाए जाते हैं। इसलिए जब हम जनजातियों की बात करते है। तो हमारे सामने उसके विकास के विभिन्न स्तर एवं उनमें पाई जाने वाली विभिन्नताओं पर ध्यान देना अति आवश्यक हो जाता हैं। इतना ही नहीं है कि जनजातीय भारत विविधता ही प्रदर्शित करता हैं अपितु जनजातियों में अनेक प्रकार की समानताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं और सभी जनजातियाँ तकनीकी एवं शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं। वे अन्य नृजातीय समुहों से भौगोलिक जनसंख्यात्मक, आर्थिक, राजनीतिक, तथा सामाजिक व्यवहार के विभिन्न पक्षों में अलग हैं तथा इसी से उनकी जनजातीय पहचान बनी हुई हैं देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ही जनजातियों की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की जाने लगी थी। इससे पहले तो उनकी स्थिति को देखते हुये भारतीय संविधान निर्माण के समय उसमें जनजातियों के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान शामिल किए गए उन प्रावधानों के अनुरूप जनजातियों की अवस्थाओं में सुधार के लिए अनेंक कल्याण कार्य केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा संचालित किए जा रहे थे । सन् १९५० में जनजातियों के विकास कार्यक्रमों को देश की पंचवर्षीय योजना की नितियों के अन्तर्गत रखा गया इस दिशा में इसी वर्ष योजना आयोग का भी गठन किया गया था यह देश की प्रमुख केन्द्रीय संस्था हैं जिसके माध्यम से सम्पूर्ण देश में विकास योजनाएं संचालित की जाती है। राष्ट्रीय विकास परिषद् के माध्यम से इसका सम्पर्क सभी राज्यों से रहता है संविधान में किए गए विशेष प्रावधानों के अनुरूप प्रारम्भ से ही देश के ग्रामीण क्षेत्रों को सर्वप्रथम विकसित करने हेतु प्रयास किए गये।

प्रस्तावना –

भोटिया जनजाति का कृषक महिलायें हो या किसी भी ग्रामीण महिलायें हो संसार के लगभग आधे भोजन का उत्पादन करती हैं परन्तु जमीन स्वामित्व नहीं रखती । संसार में मजदूरों की कुल जनसंख्या में महिलाओं का हिस्सा लगभग आधा है । भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ कृषि कार्य मशीनों के स्थान पर ज्यादातर श्रम पर ही निर्भर है। कृषि में भोटिया जनजातियों के महिलायें अधिक योगदान देती हैं। । भोटिया जनजातियों के महिलाओं का कार्य केवल खेत पर खाना पहुंचाना तक ही सीमित नहीं है। बल्कि खेती-बाड़ी के मेहनत भरे कार्य महिलायें ही करती हैं। भोटियाज के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक वर्ग, ६८ प्रतिशत अनपढ़ महिलायें होने के बावजूद जहां तक कृषि विकास में महिला का सम्बंध है। ग्रामीण महिलायें खेती के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देती है। बुवाई, निराई, गुड़ाई, खाद देना सिंचाई, फसल की कटाई, मड़ाई व ओसाई आदि सभी कार्यो में वे शामिल हैं । बागवानी फसलों की देखभाल से लेकर फलों के संरक्षण में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है । चाय की पत्तियों से लेकर पशुओं की देखभाल, गोबर, कचरे को खाद के रूप में काम में लेना प्रायः स्त्रियों के ही हाथ में रहता हैं।हमारे देश की लगभग ८५ प्रतिशत कृषक परिवार की महिलाओं कृषि क्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। खेतों में बिना मजदूरी के परिश्रम कृषक परिवार की महिलाओं की ही जिम्मेदारी हैं। पारिवारिक श्रम की आय में उनकी हिस्सेदारी अधिक रहती है । नतीजतन कृषि से होने वाली आय का बड़ा हिस्सा उन्हीं की

बदौलत कृषक परिवार को मिल पाता है।

उत्तराखण्ड की आम स्त्री एक कृषक और पशुपालक है । कृषि तथा पशुपालन उसकी मुख्य आजीविका ही नहीं बल्कि उसका प्रतिष्ठापूर्ण कार्य भी है।

पशुधन

मनुष्य के आर्थिक, सामाजिक, व धाार्मिक जीवन में पशुओं का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश में पशुओं की सबसे अधिक संख्या है।आस्ट्रेलिया, ,बेल्जियम, डेनमार्क स्वीडन, फिनलैण्ड, स्विजरलैण्ड,इटली, नार्वे, नीदरलैण्ड आदि के पास पशुओं की संख्या १ प्रतिशत से भी कम है। इन देशों में पशुधन पर आधारित उद्योग काफी विकसित है। पशुओं की चराई के लिए काफी भूमि चाहिये परन्तु भारत के पास सबसे कम भूमि है। जाहिर है। कि भारत में पशुओं का आधिक्य है। सब १६५० की पशुगणना के अनुसार भारत में ३०.५६ करोड़ पशु थे। जिनकी संख्या सन् १६६१ में बढ़कर ३३.६४ करोड़ हो गई। इससे पता चलता है कि इन वर्षो की अवधि में इनकी संख्या में लगभग १ प्रतिशत की वृद्वि हुई। स्वतन्त्रता के समय देश की कुल पशुसंख्या २८.५० करोड़ थी जो बढ कर १६८० मे ३६.६८ करोड़ हो गयी अर्थात उन दशकों में पशु संख्या में लगभग ८.५ करोड़ की वृद्वि हुई।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के लिए पशुपालन आवश्यक है। क्योंकि कृषि के लिये पशुओ से प्राप्त गोबर को ही खाद के रूप में प्रयुक्त किया जाता हैं। खेतों को जोतने व उन्हें फसल के लिय तैयार करने का कार्य बैलों, जुप्पुओं द्वारा संपन्न किया जाता है। फसल तैयार होने के पश्चात उसे बैलों,जुप्पूओं, एवं भोटिया महिलाओं के द्वारा दाने व भूसे को अलग किया जाता है। इसी प्रकार पशुपालन के लिए भी कृषि आवश्यक है।क्योंकि कृषि के द्वारा ही पशुओं के लिय चारे इत्यादि की पूर्ति हो सकती है। स्थानीय क्षेत्रों में बिना कृषि के पशुपालन में बहुत कठिनाई होती है। सामान्यतया कृषि आय की कमी को पशुपालन (दूध, पशुश्रम, बछडे,बछिया विक्रय के रूप) मजदूरी अर्जन धनादेशो से प्राप्त होने वाली आय से पूरा किया जाता है।

उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी मनुष्य पशुओं के माध्यम से ही एक जगह से दूसरे जगह अपने सामानों को लाने ले जाने में पशुओं को ही प्रयुक्त करते है। देश के किसी भी राज्य के भाग में जहाँ भारत सरकार के द्वारा सड़क निर्माण का कार्य पूरा नहीं किया गया है। वहाँ पर आज की लोग अपने राशन, कपड़े, और रोजमरा की जरूरतों के सामानों को पशुओं (बैल, जुप्पू, घोड़े,खच्चर, बकरी) के माध्यम से ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक बड़ी आसानी से लाते और ले जाते है। उत्तराखण्ड में पर्वतीय कृषि में पशुपालन की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हैं पशु ही पर्वतीय कृषिं का सबसे क्रियाशील घटक है। परन्तु उसका असली भूमिका को कभी नहीं स्वीकार किया गया है। पहाड़ों के विकास के नाम पर किये जा रहे तमाम गलत कामों में एक काम पशुधन विकास का भी है। विदेश पशुओं के वीर्य द्वारा स्थानीय पशुओ का संस्करण किया जा रहा है। ताकि दूध का उत्पादन बढ़ाया जा सके। दूसरा जोर मांस का उत्पादन बढ़ाने पर है। यह कभी मानकर नहीं चला गया कि दूध ओर मांस से भी महत्वपूर्ण उत्पाद है-पशु का कार्य पहाड़ों में गाय पालन का असली उद्देश्य खेती के लिये शक्ति पैदा करना रहा है। वह अतिरिक्त लाभ है। दुधारू पशु के रूप में भैंस की ही सदियों से मान्यता रही है। भैंस के नर वत्सों को दूध से वंचित रख इसलिये मार दिया जाता है । क्योंकि वे किसान के किसी भी काम के नहीं जबकि गाय के साथ यही कामना रहती है कि वह बछड़े नर पैदा करें।

उत्तराखण्ड के ग्रमीण परिवारों (मैदानी क्षेत्रों को छोड़कर) की पशुधन के रूप में प्रति परिवार संपत्ति का औसत मूल्य (१६६४ मे मूल्यों पर) ४८७.१४ रू बैठती है। गढ़वाल मंडल में यह ४२१.६६ जबकि कुमाऊँ मंडल में ५५२.३१ रू है। जबकि प्रति व्यक्ति पशुधन सत्पत्ति का औसत मूल्य ७६.२४ है। जबकि कुमाऊँ मंडल में यह १०८.८३ बैठता है। सामान्यतया पर्वतीय ग्रमों में दुधारू पशुओं में गाय तथा भैंस पाले जाते है। तथा कृषि कार्य के लिए बैल,जुप्पू को भी रखा जाता है। और सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने के लिए बैंल,जुप्पू, घोड़ा, खच्चर, बकरी का प्रयोग किया जाता है। साधारण स्थिति में जिन परिवारों में पुरूष अर्जन अथवा कार्य योग्य पुरूष गाँव में ही रहते हैं। वे अधिकाशतथा बैल, जुप्पू, घोड़ा, खच्चर रखते है। तथा जिन परिवारों के पुरूष अर्जक अथवा कार्य योग्य पुरूष गाँव से बाहर आजिविकापार्जन करते हैं ऐसे परिवारों में बैलों, जूप्पूओ, घोड़ा, खच्चर रखने या पालने का प्रतिशत बहुत कम है।कुमाऊँ मण्डल की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि आधारित है। जनसंख्या का अधिकतर भाग कृषि से जूड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग शत प्रतिशत महिलायें कृषि व इससे जुड़े अन्य व्यवसाय में जुड़ी है पर्वतीय या ग्रामीण क्षेत्र में कृषि मुख्य व्यवसाय होते हुये की जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त नही है। यहा की अधिकांश कृषि जोतें १ हे० से भी कम आकार की है।जो सीमान्त कृषक की प्रधानता को दर्शाता है। कहने के लिये भूमि के मालिक परिवार जमीदारी की स्थिति रखते है। परन्तु इसकी भू सम्पत्ति की मात्रा के अनुसार लगभग ६५ प्रतिशत भू स्वामी १० एकड़ से भी कम भूमि के मालिक है यद्यपि पर्वतीय क्षेत्र में उपलब्ध प्रति व्यक्ति भूमि मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है। तथापि यहां कुल क्षेत्रफल का अधिकांश भाग वन एवं चट्टान युक्त होने के कारण यहाँ कृषि कार्य नही कि जा सकती है। जिस कारण पर्वतीय क्षेत्र में प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि कम है।

सम्बन्धित कार्यो की समीक्षा–

प्रस्तावित अध्ययन से संबंघित जो संदर्भ साहित्य प्राप्त होता है। उसे तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता हैं। प्रथम इस श्रेणी के अन्तर्गत वे अध्ययन सम्मिलित किये गये हैं। कुमाऊँ क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक, व्यावसायिक वितरण तथा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की आर्थिक दशा में परिवर्तन सामाजिक स्तरीकरण आदि समस्याओं से संबन्धित पहलूओं पर प्रकाश डालते है। इस श्रेणी में जिन लेखकों एवं शोधाथियों के नाम उल्लेखनीय है उनमें - सनवाल, आर. डी. (दिल्ली-१६७६) लक्ष्मी नारायण, एच तथा एस.एस त्यागी (दिल्ली-१६८२) पंत, एस.डी. (लंदन-१६३५) विष्ट, नारायण सिंह (टिहरी १६८१) पांड़े, जी. सी (नैनीताल-१६७५) पांडे,पी.सी. (नैनीताल-१६७८) पांडे.पी.एन (नैनीताल-१६७६) जोशी ,एच.सी (नैनीताल-१६८६) केड़ा, सावित्री (नैनीताल -१६८६) विष्ट, रेखा (नैनीताल-१६६८) मेहता, सीता (नैनीताल-२००४) तिवारी, ललित मोहन

(नैनीताल-२००५) आदि प्रमुख हैं। किन्तु उपरोक्त अध्ययन ग्रामीण महिला एवं उनका पर्वतीय अर्थव्यवस्था में योगदान तथा महिला शिला एवं प्रशिक्षण , कृषि एवं गैर कृषि क्षेद में महिला क्षम की स्थिति एवं उनकी भूमिका महिला श्रम की उपादेयता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों महिला विधानों एवं सरकारी संस्थाओं से प्राप्त होने वाले लाभो से संबन्धित (पर ही प्रकाश डालते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य की रूप रेखा तैयार की गयी है। द्वितीय, प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं विषय से मेल खाने वाली कुछ ऐसी कृतियां भी है। जिनके अध्ययन से प्रस्तुत अनुसंधान को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने मे सहायता मिलती है। ऐसे लेखकों में- कपूर, प्रकिला (दिल्ली-१६७०) मेहता, विमला (दिल्ली-१६७६) खुराना, अहमद (दिल्ली- १६७६) कुम्पूस्वामी,वी (गाजियाबाद-१६७६) मेहता, एस० (दिल्ली-१६८२) अग्रवाल, सुशीला (दिल्ली १६८८) देसाई, एन० (बम्बई-१६८८) बोसेरप, ईस्टर (लंदन-१६८६) जोशी, एच० सी (अल्मोड़ा-१६८६) अवस्ती, इंदिरा (दिल्ली-१६६२) माथुर, दिपा (जयपुर-१६६२) शर्मा, एवं सिंह (दिल्ली-१६६३) अग्रवाल, सी.एम. (अल्मोड़ा-१६६४) लारेन्स, जास्मिन (मध्य प्रदेश-१६६६) रानी, आशु (जयपुर-१६६६) बोहरा,आशा, मिश्रा इंदिरा (दिल्ली-२०००) चन्द्रा, सुस्मिता (दिल्ली-२००१) शर्मा, प्रज्ञा (जयपुर-२००१) अंसारी, एम०ए० (जयपुर-२००१) शेण्डे, हरिदास, रामजी (जयपुर-२००४) त्रृपाठी, कुसुम (जयपुर-२००४)अग्रवाल, सी०एम० (अल्मोड़ा-२००४) आदि प्रमुख है।

तृतीय इस श्रेणी के अर्न्तगत केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर प्रकाशित होने वाली सरकारी प्रकाशन, प्रतिवेदन तथा शोध प्रत्रिकायें सम्मिलित किये गये है। जो द्वितीयक समंकों के रूप में प्रस्तावित शोध के विकास एवं परिर्वधन मे महत्व रखते हैं।

अध्ययन का क्षेत्र–

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल में जनपद पिथौरागढ़ के भोटिया जनजातियों के आर्थिक विकास का आकलन करने के लिए जनपद के दो सीमान्त विकासखण्डों मुनस्यारी और धारचूला का चयन किया गया क्योंकि इन्हीं दो जनपदों में भोटिया जनजाति मूलत;निवास करते हैं। मुनस्यारी और धारचूला विकासखण्ड २,७२,६५३ हैक्टेयर (५,५८७ वर्ग किमी) भोगोलिक क्षेत्र को समाहित करता हैं। जिससें ३६.५ प्रतिशत क्षेत्र वनस्पति रहित है। इन विकासखण्डों में १,५३,४७८ हेक्टेयर वनाच्छादित क्षेत्र तथा १६,५२० शुद्ध बोया गया क्षेत्र तथा ३०,४७६ में चरागाह क्षेत्र है। जिसमें से भोटिया समुदाय की जनसंख्या दोनों विकासखण्डों को मिलाकर १६,२७६ (२००१ के अनुसार) है और यहाँ का भोगोलिक क्षेत्रफल पूरे जनपद का ६३ प्रतिशत है।

अध्ययन का उद्देश्य

(१) ग्रामीण कृषि क्षेत्र में भोटिया जनजातीय महिलाओं की भूमिकाओं का अध्ययन करना।
(२) ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भोटिया जनजातियों के महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना ।

अध्ययन विधि –महिलाओं का चयन दैव प्रतिचयन प्रणाली पर किया गया।

(क) प्राथमिक समंकों का संकलन–शोध कार्य के लिए हम सर्वप्रथम भोटिया जनजाति के उन क्षेत्रों के भोंगोलिक स्तर पर आंकड़ों का सकलन करते हुये उन दो विकासखण्डों में से ७५-७५ महिलाओं का चयन शोधार्थी के द्वारा शोध कार्य हेतु चयन किया गया साथ ही आवश्यकतानुसार प्रश्नावली के माध्यम से व्यक्तिगत साक्षात्कार विधि द्वारा भी शोध किया गया।

(ख) द्वितीयक समंकों का संकलन– द्वितीयक समंको का संकलन संस्थाओं के वार्षिक एवं मासिक प्रगति प्रतिवेदनों तथा अप्रकाशित विवरणों को कार्यालयों से एकत्र किया गया तथा इसके अतिरिक्त सन्दर्भ पुस्तकों, भारत सरकार तथा उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकों, योजनाओं रिपोर्टो से भी द्वितीयक संमकों का संकलन किया गया।

(ग)प्रतिदर्श चयन – प्रस्तुत अध्ययन के लिए अध्ययन क्षेत्र जनपद पिथौरागढ़ के दो विकास खण्ड धारचूला एवं मुनस्यारी के गाँवों में रखने वाले भोटिया जनजातियों के गाँवों का अध्ययन किया गया तथा जिसमे १५० महिलाओं का अध्ययन दैव प्रतिचयन प्रणाली के आधार पर किया गया।

उत्तरदाताओं की पृष्ठ भूमि–

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं की उम्र २० से ६० तक के महिलाओं को ही लिया गया है,जिसमें उनके द्वारा पशुधन और कृषि में भोटिया महिलाओं की भागीदारी और शिक्षा तथा आय से जुड़े कतिपय तथ्यों का संकलन कर उन्हें विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए १५० उत्तरदाताओं से तथ्यों का संकलन किया गया है और उनके प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं ।

तालिका–1
महिला उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर कुल

विकासखण्ड का नाम	निरक्षक	प्राथमिक	जूनियर	हाईस्कूल	इण्टर	स्नातक	स्नातको–त्तर	कुल
धारचूला	30 (40)	15 (20)	13 (17.33)	08 (10.67)	06 (8)	02 (2.67)	01 (1.33)	75 (100)
मुनस्यारी	40 (53.33)	20 (26.67)	09 (12)	05 (6.67)	01 (1..33)	– (–)	– (–)	75 (100)
कुल	70 (46.67)	35 (23.33)	22 (14.67)	13 (8.67)	07 (4.67)	02 (1.33)	01 (.66)	150 (100)

(नोट- कोष्ठक में दिये गये आकड़े प्रतिशत को व्यक्त करते हैं।)

उपरोक्त तालिका में महिला उत्तरदाताओं के शिक्षा स्तर को अभिव्यक्त किया गया हैं। जिसमें तालिका-१ से स्पष्ट हैं कि दोनों विकासखण्डों के न्यादर्श परिवारों में निरक्षक महिला उत्तरदाता ४६.६७ प्रतिशत हैं। प्राथमिक,जूनियर,हाईस्कूल,इण्टर, स्नातक व स्नातकोत्तर तक शिक्षित महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमश; २३.३३, १४.६७, ८.६७, ४.६७, १.३३, व .६६ हैं धारचूला औंर मुनस्यारी दोनों विकासखण्डों में सर्वाधिक महिला उत्तरदाता निरक्षर ही हैं और धारचूला विकासखण्ड में निरक्षर महिला उत्तरदाता ४० प्रतिशत हैं तथा २० प्रतिशत महिलायें प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है।जूनियर,हाईस्कूल, इण्टर, स्नातक व स्नातकोत्तर तक शिक्षित महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमश; १७.३३, १०.६७, ८, २.६७,व १.३३ हैं। और मुनस्यारी विकासखण्ड में ५३.३३ प्रतिशत निरक्षर महिला उत्तरदाता हैं और प्राथमिक जूनियर,हाईस्कूल व इण्टर, तक शिक्षित महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमश; २६.६७, १२, ६.६७, व १.३३ हैं। मुनस्यारी विकासखण्ड के न्यादर्श परिवारों में कोई भी महिला उत्तरदाता स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित नहीं हैं।

तालिका–2
न्यादर्श परिवार में पशुधन

विकासखण्ड का नाम	न्यादर्श क्षेत्र में उत्तरदाताओं की संख्या	पशुओं की कुल संख्या	पशुओं का कुल मूल्य	प्रति परिवार पशुओं की संख्या	प्रति परिवार पशुधन का मूल्य	प्रति पशु का औसत मूल्य
धारचूला	75	296	7,25,600	3.95	9,675	2,451
मुनस्यारी	75	316	7,76,400	4.21	10,352	2,456
कुल	150	612	15,02,000	4.08	10,013	2,454

उपरोक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता हैं कि दोनों विकासखण्ड के कुल १५० परिवारों में कुल ६१२ पशु हैं। और प्रति परिवार में ४.०८ पशुओं की औसत संख्या हैं। जिसका औसत मूल्य २,४५४ हैं। धारचूला विकासखण्ड के ७५ परिवारों में कुल २९६ पशु हैं और प्रति परिवार में ३.९५ पशुओं की औसत संख्या हैं। जिसका औसत मूल्य २,४५१ है तथा मुनस्यारी विकासखण्ड के ७५ परिवारों में कुल ३१६ पशु हैं और प्रति परिवार में ४.२१ पशुओं की औसत संख्या हैं। जिसका औसत मूल्य २,४५६ है।

तालिका–3
विकासखण्ड में कियात्मक जोतों के आकार वर्गानुसार (हेक्टयर) संख्या

विकासखण्ड का नाम	.5 हेक्टयर से कम	.5 से 1 हेक्टयर	1 से 2 हेक्टयर	2 से 4 हेक्टयर	4 से 8 हेक्टयर	8 हेक्टयर से अधिक	कुल परिवारों की संख्या
धारचूला	25 (33.33)	16 (21.33)	14 (18.67)	12 (16)	6 (8)	2 (2.67)	75 (100)
मुनस्यारी	28 (37.33)	17 (22.67)	14 (18.67)	10 (13.33)	5 (6.67)	1 (1.33)	75 (100)

(नोट- कोष्ठक में दिये आकड़े प्रतिशत को व्यक्त करते हैं।)

उपरोक्त तालिकाओं के माध्यम से ज्ञात होता है कि दोनों विकासखण्ड में कृषि योग्य भूमि बहुत कम हैं। ३३.३३ प्रतिशत लोग धारचूला विकासखण्ड में .५ हेक्टयर से कम भूमि में कृषि कार्य करते हैं और इसी तरह .५से १, 1से २, २से४, ४से८ और ८ हेक्टयर से अधिक भूमि में कृषि कार्य करने वालों का प्रतिशत,२१.३३, १८.६७, १६, ८,व २.६७ हैं जो मुनस्यारी विकासखण्ड में ३७.३३ प्रतिशत लोग .५ हेक्टयर से कम भूमि में कृषि कार्य करते हैं।और इसी तरह .५से १, 1से २, २से४, ४से८ और ८ हेक्टयर से अधिक भूमि में कृषि कार्य करने वालों का प्रतिशत, २२.६७, १८.६७, १३.३३, ६.६७ व १.३३ है।

तालिका–4
न्यादर्श परिवारों की वार्षिक आय

विकासखण्ड का नाम	20,000 से कम	20,000 से 40,000	60,000 से अधिक	कुल
धारचूला	2 (2.67)	23 (30.67)	50 (66.66)	75 (100)
मुनस्यारी	1 (1.33)	22 (29.33)	52 (69.34)	75 (100)
कुल	3 (2)	45 (30)	102 (68)	150 (100)

नोट- कोष्ठक में दिये आकड़े प्रतिशत को व्यक्त करता हैं !)

उपरोक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता है कि दोनों विकासखण्ड (धारचूला और मुनस्यारी) के २ प्रतिशत लोगों का वार्षिक आय २०,००० से कम है तथा २०,०००से ४०,००० रू वार्षिक आय ३० प्रतिशत लोगों का है और ६०,०००रू से अधिक वालों की संख्या ६८ प्रतिशत है। इसी प्रकार धारचूला विकासखण्ड में २.६७ प्रतिशत लोगों का वार्षिक आय २०,००० से कम है तथा २०,०००से ४०,००० रू वार्षिक आय ३०.६७ प्रतिशत लोगों का हैं औंर ६०,००० से अधिक वालों का प्रतिशत ६६.६६ है और मुनस्यारी विकासखण्ड में १.३३ प्रतिशत लोगों का वार्षिक आय २०,००० से कम है तथा २०,०००से ४०,००० रू वार्षिक आय २९.३३ प्रतिशत लोगों का है और ६०,०००रू से अधिक वालों की संख्या ६९.३४ प्रतिशत है।

निष्कर्ष–

ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में संदिग्ध होने के उपरान्त भी किसी देश के निवासित जनजातियां उस देश की मूल अथवा आदिन निवासी कहलाती है। सामान्यतः ऐसे मानवीय समुदायों को जनजाति आदिम जाति,वन्यजाति पिछड़ी जाति,अनुसूचित जनजाति, आदि नामों से पुकारा जाता है। जो एक ऐसी सामान्य भाषा बोलते हों एक सामान्य सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि व जीवन यापन की पद्धति अपनाये हुयें हों और एक निश्चित भू-भाग में रहते हों ऐसे मानवीय समुओं की अन्य विशेषताओं में इनका पितृतात्मक नेतृत्व और अपनी प्राकृतिक पारिस्थितितीय संरचना पर पूर्ण रूप से निर्भर रहता है। सम्पूर्ण विश्व के जनजातिय सन्दर्भ में भारत का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि जनसंख्यात्मक दृष्टि से अफ्रीका महाद्वीप के पश्चात सर्वाधिक संख्या में जनजातियाँ भारत में ही निवास करती है। जिन्हें उसकी जनसंख्या के आधार पर ६ मुख्य भौगोलिक क्षेत्रों के अन्तर्गत ६१३वर्गों में विभाजित किया गया है।

भारत के हिमालयी क्षेत्र के माध्यम निवास करने वाले जनपद पिथौरागढ़ के भोटिया जनजातिय अपनी विशिष्ट भौगोलिक निवास स्थलों के कारण मूल रूप से पशुचारक,कृषि तथा व्यापरिक समुदाय के रहे हैं। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में अनादिकाल से यातायात की सुविधाओं के अभाव के कारण आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति मैदानी क्षेत्रों से तो सम्भव नही थी। फलस्वरूप जनजाति तिब्बत से इस क्षेत्र के लिए आवश्यक खादय सामग्री लाकर विपणन का कार्य किया करती हैं। इन तिब्बत व्यापार को निरन्तरता सहजता व सुगमता को बनाये रखने के लिये ही भोटिया जनजाति के द्ववारा भार वाहन पशुओं (बैल, जुप्पू, घोड़े,खच्चर, बकरी) पाले जाते थे जो कि

भार वाहन पशुओं की देख भाल भोटिया जनजातियों के महिला के द्वारा ही किया जाता है। कृषि कार्यों भी जनजातियों के महिला वर्गों के द्वारा ही किया जाता है। इस प्रकार हम यह कह सकते है। कि भोटिया जनजातियों के भोटिया लोगों की अर्थव्यवस्था में भोटिया जनजातियों की महिला वर्गो का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सन्दर्भित पुस्तकें एक प्रकाशन–

१.अग्रवाल, सविता अगस्त १९९१,महिला विकास : विभिन्न आयाम,राव, के. एस., खादी ग्रामोद्योग (सं.): ग्रामीण अर्थ विषयक पत्रिका, खादी और ग्रामोद्योग आयोग 'ग्रामोदय' ३ इर्ला रोड़ बम्बई, पृष्ठ–४३३।

२.भट्ट, राधा (१९९६), ''उत्तराखण्ड की नारीः श्रम साधना और पीड़ा '' वल्दिया के. एस. (सं.) उत्तराखण्ड आज, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा पृष्ठ–१९२

३.जोशी एच. सी. (१९८८) भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन योजना १६ से ३१ अक्टूबर वर्ष ३२ अंकः १७,योजना भवन नई दिल्ली ,पृष्ठ–१९१

४.जोशी एच. सी. (१९९४) उत्तरांचल की अर्थव्यवस्था में पशुधन उत्तरांचल हिलामय कृषि–१ सं० महेश्वर प्रसाद जोशी श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, पृष्ट–७८१

५.सिंह,वीर (१९८६) खेती और पशु : पहाड़ी खेती के आधार, पाठक शेखर (स.) पहाड़, हिमालय समाज, संस्कृति, इतिहास तथा पर्यावरण पर केन्द्रित,विमल आफसैट, पंचशीला गार्डन,नवीन् शाहदरा, दिल्ली, पृष्ठ,–५३

६.पाण्डे गिरीश चन्द्र,(१९७७) : उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था, कमल, पब्लिर्शस नैनीताल, पृष्ठ–५७से ५८

७.श्रीवास्तवा आर.पी.भोटियाज दि फ्रन्टियर मेल ऑफ कुमाऊँ –कैरियर्स एण्ड फोसेज, सितम्बर १९६३

८.वाल्टन जी.एच. डिस्ट्रिक्ट गजिटियर ऑफ यूनाइटेड प्रोविन्स, अल्मोड़ा वा. ३५ पृष्ठ ६४ श्री रतन सिंह रायपा द्वारा लिखित पुस्तक –''शौका सीमावर्ती जनजाति'' से उद्धृत ब्रदर्स धारचूला पिथौरागढ़ १९७४ पृष्ठ – २३६

९. पन्त घनश्याम तहसील धारचूला जिला पिथौरागढ़ की एसेसमेण्ट रिपोर्ट –१९६५ प्रेषित बन्दोवस्त आयुक्त उ०प्र० द्वारा प्रकाशित।

१०. शर्मा सुभाष चन्द्र''उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति'' संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

११. जौहरी एस.आर. अवर बोर्डर लैण्डस, पृष्ठ १८७ श्री रतन सिंह रायपा द्वारा लिखित पुस्तक '' शौका सीमावर्ती जनजाति'' से उद्धृत, रायपा ब्रदर्श धारचूला, पिथौरागढ़ १९७४ पृष्ठ –२३६

१२ .चौहान विद्या सिंह एंव राय श्रीमती श्री– भारत की जनजातियॉं (उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ में) प्रकाशन ट्रान्समी डिपो प्रकाशन श्रीनगर गढ़वाल २००६, प्रथम संस्करण।

१३. हसनैन नदीम जनजातीय भारत, प्रकाशन,रवि मजूमदार जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

१४. सिंह, ओ.पी. द हिमालया,नेचर,मैन एण्ड कल्चर

१५. बिष्ट एन. एस.उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था

१६.बैष्णव, यमुनादत्त कुमाऊं का इतिहास मार्डन बुक डिपो, नैनीताल १९७२

१७.सोडिंग नोट्स ऑन द फोटिपास ऑफ कुमाऊं एण्ड ब्रिटिश गढ़वाल

१८ .घोष,ए के प्रॉबलम ऑफ इकोनोमिक प्लानिंग इन इण्डिया

१९ .फोनिया, के.एस उत्तराखण्ड,गढ़वाल हिमालया देहरादून एशियन,१९७७

२०.पाण्डे. बी.डी.कुमाऊं का इतिहास, १९२०

२१.ई०टी० एटकिन्सन कुमाऊं हिमालया

२२.थापर एस. डी ढलाक लेबल प्लानिंग

२३ .गॉधी मोहनदास करमचन्द ग्राम योजना

२४.डबराल,एस.पी. उत्तराखण्ड के पशुचारक

२५. रन्थावा एम.ए. द कुमाऊं हिमालया

२६. पाण्डे जी.सी.उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org